डॉ. भीमराव अंबेडकर आधारित फिल्में: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ . सुरभि विप्लव फिल्म अध्ययन विभाग म. गां. अं.हिं. वि.वि वर्धा क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज

डॉ. हरप्रीत कौर सहायक प्राध्यापक अनुवाद अध्ययन विभाग म. गां. अं.हिं. वि.वि वर्धा क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज

भारतीय सिनेमा में आंबेडकर की छाया गांधी के बाद सबसे अधिक दिखाई देती है सिर्फ वैचारिक पर नहीं बल्कि संवैधानिक तौर से भी। आंबेडकर ना सिर्फ भारतीय नायक हैं बल्कि विश्व पटल पर भी उन्हें एक व्यक्ति विशेष के रूप में देखा जाता है। फिल्मों, नाटकों और किताबों सहित कई काम, आंबेडकर के जीवन पर आधारित हैं।उनके जीवन पर कई भाषाओं में फिल्में बन चुकी हैं। मराठी, कन्नड़ और कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी बी.आर आंबेडकर पर फिल्में बनी हैं। जिनमें **'बाल भीमराव', 'रमाबाई भीमराव आंबेडकर' 'डॉ.बीआर आंबेडकर' 'भीम गर्जन' डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, युगपुरुष डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर** आदि कई भाषाओं में फिल्में बनी हैं। फिल्म निर्माता प्रकाश नारायण जाधव ने 2018 में मराठी जीवनी फिल्म **'बाल भीमराव'** का निर्देशन किया था। फिल्म के कलाकारों में मोहन जोशी, विक्रम गोखले, किशोरी शहाणे विज और प्रेमा किरण थे। यह फिल्म आंबेडकर के युवा दिनों में गहराई से छाई हुई थी। इसने दिखाया कि कैसे बचपन से ही उनकी सोच को आकार दिया गया था,और कैसे उनके आस-पास हो रही चीजों ने उन्हें एक महान दलित नेता बनने में मदद की, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मदद करेंगे।इसी क्रम में 'रमाबाई भीमराव आंबेडकर' यह मराठी में आंबेडकर और उनकी पत्नी पर एक जीवनी फिल्म थी।अभिनेता निशा पारुलेकर, गणेश जेठे, दशरथ हतिस्कर और स्नेहल वेलंकर ने फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई।यह फिल्म आंबेडकर के वयस्क जीवन से संबंधित थी और उनकी पत्नी पर अधिक केंद्रित थी। तमाम कठिनाइयों के बावजूद, रामबाई आंबेडकर ने अपने पति को प्रेरित किया और देश के वंचित वर्गों के उत्थान के अपने पति के मिशन के पीछे चट्टान की तरह खड़ी रहीं।फिल्म ने बताया कि कैसे उनके विचारों और विचारधाराओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के आसपास उनके कुछ विचारों को आकार देने में मदद की। मराठी के बाद कन्नड में डॉ. बीआर आंबेडकर' 2005 में बनी जिसका निर्देशन फिल्म निर्माता शरण कुमार कब्बूर ने किया है। अभिनेता विष्णुकांत बीजे आंबेडकर की शीर्षक भूमिका निभाते हैं, जबकि अभिनेत्री तारा उनकी पहली पत्नी, रमाबाई आंबेडकर की भूमिका निभाती हैं, और अभिनेत्री भाव्या उनकी दूसरी पत्नी, सविता आंबेडकर की भूमिका निभाती हैं।यह फिल्म उन सामाजिक-आर्थिक सुधारों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिन्हें वह भारतीय समाज में लाना चाहते थे। फिल्म में उनके बचपन से लेकर उनके आखिरी दिनों तक के सफर को दिखाया गया है। इसने कई कन्नड़ राज्य पुरस्कार जीते।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर पर आधारित फिल्मों की समीक्षा समाज में उनके योगदान और उनके विचारों के प्रभाव को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इन फिल्मों के माध्यम से अंबेडकर के संघर्षमय जीवन, उनके समाज सुधारक दृष्टिकोण और दलित अधिकारों के लिए किए गए आंदोलनों को जनता तक प्रभावशाली तरीके से पहुँचाया गया है। उनके जीवन और विचारधारा पर बनीं प्रमुख फिल्मों में सामाजिक सुधार, समानता और न्याय के मुद्दों को प्रभावी रूप से चित्रित किया गया है।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर (2000)

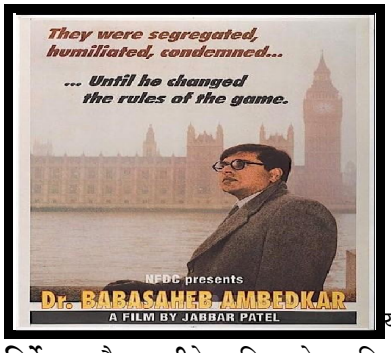

यह फिल्म डॉ. अंबेडकर के जीवन पर आधारित एक उत्कृष्ट कृति है।**जबरदस्त निर्देशन** और **ममूटी**के अभिनय ने इस फिल्म को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण बना दिया है। फिल्म का निर्देशन **जाब्बार पटेल** द्वारा किया गया है और इसे भारत सरकार के **नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (NFDC)**द्वारा निर्मित किया गया है।फिल्म में अंबेडकर की शिक्षा के प्रति गहरी आस्था, सामाजिक भेदभाव के खिलाफ उनकी लड़ाई और भारतीय संविधान के निर्माण में उनकी अहम भूमिका को दर्शाया गया है। यह फिल्म उनके प्रारंभिक जीवन, शिक्षा, संघर्ष और अंततः उनके बौद्ध धर्म कीओर झुकाव को विस्तार से चित्रित करती है।

मुख्य विषय:

- जातिगत भेदभाव और असमानता के खिलाफ संघर्ष।
- अंबेडकर का शिक्षा के माध्यम से समाज सुधार का दृष्टिकोण।

- भारतीय संविधान का निर्माण और उसमें अंबेडकर का योगदान।

यह फिल्म आलोचकों द्वारा सराही गई, विशेष रूप से अंबेडकर के जीवन के संघर्षों और विचारधारा को प्रभावी रूप से चित्रित करने के लिए। यह एक प्रमुख शैक्षिक फिल्म भी है जो भारतीय समाज में अंबेडकर के योगदान को दर्शाती है। इस फिल्म में आंबेडकर ने खुलकर यह भी दिखने की कोशिश की है कि असल में कांग्रेस सिर्फ अच्छी और लुभाने वाली भाषा का प्रयोग करती है वह समाज से छुआ-छूत मिटाने तथा आछूतों के अधिकार के लिए कोई ठोस कदम तक नहीं उठती। जोकि अनिवार्य है उन्हें आरंक्षण दे ताकि हजारों वर्षों से दमित शोषित वर्ग पढ़कर राजनीति में अध्यापन में हिस्सेदारी बन सके। यहाँ तक आंबेडकर गांधी को जाति की वास्तविकता से परिचय कराते हैं उन्हें हिन्दू से अलग करने की बात कहते हैं लेकिन गांधी असमहत होते हैं फिर भी आंबेडकर अडिग रहते हैं। फिल्म के अंत में वही दिखाया गया जो वास्तविक जीवन में आंबेडकर के साथ घाटता है कि वे भले ही हिन्दू धर्म में पैदा हुये हैं लेकिन मरेंगे हिन्दू होकर नहीं। इस दृश्य में भारत के सभी धर्म के ठेकेदार उनके पास आते हैं चाहे वह हिन्दू पंडित, मौलवी, पादरी यहाँ एक संवाद बहुत उपयोगी है जहां आंबेडकर हिन्दू पंडित से कहते हैं कि 'आप किसी महार को शंकार्यचार्य क्यों नहीं बना देते? और हजारों लोगों से उनके पैर क्यों छूआते?' यह पंक्ति आज भी हमारे समाज से सवाल पूछने लायक है। अंत में आंबेडकर सभी धर्मों को पढ़ने समझने के बाद उन्हें सबसे तार्किक और प्रज्ञा,करुणा और समता से भरा हुआ बुद्ध धर्म लगा जिसे उन्होनें नागपुर के दीक्षाभूमि में अपनाते हुये कहा कि 'जैसे भारत के लिए स्वराज जरूरी है वैसे ही आछूतों के लिए धर्म परिवर्तन।' फिल्म को सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी फीचर फिल्म तथा ममूटी के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और नितिन चंद्रकांत देसाई के लिए सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला।यह फिल्म केन्द्रिय सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय और महाराष्ट्र सरकार द्वारा संयुक्त रूप से वित्त पोषित एक परियोजना थी। फिल्म को नौ भारतीय भाषाओं में डब किया गया। फिल्म का वस्त्र विन्यास आस्कर विजेता भानु आथईया ने किया है जो उस काल क्रम को स्थापित करती है। फिल्म कि सिनेम्तोग्राफी अशोक मेहता ने की है। अशोक मेहता द्वारा दृश्य बिम्ब में बहुत प्रभाव उत्पन्न हुआ है। यह फिल्म एक तरह से मिल का पत्थर साबित हुआ है। 3 घंटे की अवधि में सम्पूर्ण डॉ . बबसाहेब अंबेडकर जीवन संघर्षों को जब्बार पटेल ने बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

जय भीम (2021)

हालांकि यह फिल्म सीधे अंबेडकर के जीवन पर आधारित नहीं है, लेकिन यह अंबेडकर के विचारों से गहराई से प्रेरित है। फिल्म का निर्देशन**T.J.Gnanavel** द्वारा किया गया है और इसमें**सूर्या**ने मुख्य भूमिका निभाई है। यह फिल्म जातिगत भेदभाव और सामाजिक न्याय की लड़ाई पर केंद्रित है। फिल्म में एक ईमानदार वकील, जो अंबेडकर के आदर्शों से प्रेरित है, गरीब आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ता है।

फिल्म में अंबेडकर के उन विचारों की झलक मिलती है जो समानता, न्याय और मानवाधिकारों के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती है। यह दिखाता है कि अंबेडकर की विचारधारा आज भी समाज के हाशिए पर खड़े लोगों के लिए प्रासंगिक है, खासकर कानूनी और न्याय प्रणाली में।

मुख्य विषय:

- जातिगत अत्याचार और हाशिए पर खड़े समाज के खिलाफ कानूनी लड़ाई।
- अंबेडकर के विचारों से प्रेरित कानूनी और सामाजिक सुधार।

यह फिल्म न केवल बॉक्स ऑफिस पर सफल रही, बल्कि इसने समाज में न्याय और समानता के मुद्दों पर भी गहन चर्चा छेड़ी। इसे मानवाधिकार और कानूनी सुधारों की दृष्टि से एक अहम फिल्म माना गया है। **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर** फिल्म जहां खत्म होती है **जय भीम** वहीं से शुरू होती जहां वास्तविक में भारत के संसद में आंबेडकर का यह कथन है कि "संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो,अगर इसे अमल में लाने वाले लोग खराब निकले तो संविधान निश्चित रूप से अच्छा साबित नहीं होगा।"

जय भीम फिल्म आज की कानून व्यवस्था की पोल खोलती है जहां संविधान का निर्माण भले ही आंबेडकर ने समाज में हो रहे दलित एवं जनजाति उत्पीड़न को देखकर किया था लेकिन आज आजादी के 75 साल बाद भी 21वीं सदी में दलित और निम्न जातियों के साथ जो भेद-भाव सवर्ण कर रहें हैं और इसे करने में हमारी सरकार भी उनकी सहायता करती है। **जय भीम**

फिल्म जिसका निर्देशन टीजे ज्ञानवेल ने किया है और अभिनय मुख्य कलाकार के रूप में ज्योतिका और सूर्या ने किया है यह भारतीय तमिल भाषा की फिल्म है। फिल्म में लिजोमोल जोस और मणिकंदन, राजिशा विजयन, प्रकाश राज, राव रमेश और अन्य सहायक भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म कोरोना महामारी के दौरान बनाई गई है हालांकि उस दौरान फिल्म को शूट करने में कई समस्याएँ आयीं लेकिन 2021 के सितंबर में फिल्म का कार्य पूरा हुआ। फिल्म की सिनेमैटोग्राफी और एडिटिंग क्रमशः एसआर काथिर और फिलोमिन राज के द्वारा पूर्ण की गयी है। संगीत और फिल्म स्कोर सीन रोल्डन द्वारा रचित है। जय भीम फिल्म को फ़िल्मकार कमल हासन, सिद्धार्थ, आर माधवन और शिवकार्तिकेयन सहित फिल्म बिरादरी के सदस्यों ने खूब सराहा। जस्टिस के. चंद्रू , जो कहानी की चर्चा से लेकर पोस्ट-प्रोडक्शन के काम तक फिल्म से निकटता से जुड़े थे ने द फेडरल के साथ एक साक्षात्कार में कहा था कि "यह फिल्म सेंगिनी की दुखद कहानी की मात्र रीटेलिंग नहीं है, बल्कि इरुला जनजाति को कमजोर समुदायों के शिकार की बड़ी तस्वीर पर प्रकाश डालने के विषय में अधिक है"। एम.के स्टालिन , तमिलनाडु के मुख्यमंत्री, फिल्म की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इस फिल्म ने रात भर उनके विचारों पर कब्जा किया रहा और यह कि फिल्म देखने के बाद उनका मन बहुत भारी महसूस कर रहा था। फिल्म का शीर्षक बीआर अंबेडकर के अनुयायियों द्वारा इस्तेमाल किए गए नारे **जय भीम** का एक संदर्भ है।

3. आनंद पाटवर्धन की डॉक्यूमेंट्रीज (जैसे 'जय भीम कॉरेस्पोंडेंस', 1992)

अन्य प्रमुख फिल्मों में से एक निर्देशक आनंद पाटवर्धन की डाक्यूमेंट्री**'जय भीम कॉरेस्पोंडेंस'**है। यह डाक्यूमेंट्री अंबेडकर के विचारों को आधुनिक संदर्भ में जातिगत संघर्षों के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। यह फिल्म भारतीय समाज के उन वर्गों की कठिनाइयों को उजागर करती है जो अब भी जातिगत भेदभाव का शिकार हैं।

मुख्य विषय:

- जातिगत हिंसा और सामाजिक अन्याय।
- अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता और आधुनिक जातीय संघर्ष।

यह फिल्म अंबेडकर के जीवन की तरह, दलितों के संघर्ष और सामाजिक सुधारों पर केंद्रित है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे अंबेडकर के विचार और दृष्टिकोण जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष में आज भी प्रासंगिक हैं।

4. द साइलेंट रिवोल्यूशन (2004)

यह फिल्म बाबासाहेब अंबेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण करने और उनके विचारों को बौद्ध धर्म के माध्यम से प्रस्तुत करने पर आधारित है। फिल्म ने यह दर्शाया कि अंबेडकर ने किस प्रकार जातिगत भेदभाव और असमानता के खिलाफ अपनी अंतिम लड़ाई लड़ी और बौद्ध धर्म को अपनाकर दलितों को एक नई दिशा दी। इस फिल्म में अंबेडकर के जीवन के अंतिम वर्षों और बौद्ध धर्म ग्रहण करने के उनके फैसले पर गहन दृष्टिकोण दिया गया है।

इस फिल्म में मुख्य विषयके रूप में बौद्ध धर्म का चयन और जातिगत भेदभाव से मुक्ति।अंबेडकर का धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण। को दर्शाया गया है|यह फिल्म भारतीय सिनेमा में एक अनूठी फिल्म है जिसने सामाजिक सुधारों और बौद्ध धर्म को आधुनिक भारतीय संदर्भ में प्रस्तुत किया है। फिल्म ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के साथ-साथ अंबेडकर की संघर्षशीलता और उनकी अंतिम उपलब्धियों को दर्शाया है।बाबासाहेब अंबेडकर के जीवन पर आधारित फिल्में और डाक्यूमेंट्रीज उनकी सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा को सजीव रूप में दर्शाती हैं। ये फिल्में न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती हैं, बल्कि आज के समाज में भी जातिगत भेदभाव, सामाजिक न्याय और समता के मुद्दों पर गहन संवाद उत्पन्न करती हैं। अंबेडकर के विचारों की गहराई और उनके योगदान को समझने के लिए ये फिल्में महत्वपूर्ण माध्यम साबित हुई हैं।

इन फिल्मों ने अंबेडकर के संघर्षों और उनके दृष्टिकोण को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया है, और इसने उन्हें भारत के सामाजिक सुधारक नायक के रूप में स्थापित किया है। चाहे वह ममूटी द्वारा निभाई गई भूमिका हो, या फिर सूर्या की अभिनय क्षमता, इन फिल्मों ने अंबेडकर के विचारों और उनके जीवन को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है, जो आज भी भारतीय समाज में सामाजिक सुधार की प्रेरणा के रूप में काम कर रहे हैं।

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान और उनके जीवन पर आधारित फिल्मों ने भारतीय समाज के कई जटिल पहलुओं को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये फिल्में न केवल अंबेडकर के जीवन संघर्ष और उनकी उपलब्धियों को दर्शाती हैं, बल्कि जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और दमन के खिलाफ उनके संघर्ष को भी प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं। इन फिल्मों के माध्यम से यह दिखाया जाता है कि अंबेडकर ने कैसे भारतीय समाज को प्रभावित किया और दलित समुदाय के लिए एक नई दिशा दिखाई।

अत: अंबेडकर पर आधारित फिल्मों में भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, छुआछूत और उत्पीड़न की कठोर सच्चाइयों को प्रकट किया गया है। फिल्म "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर" (2000) में उनके बचपन से लेकर संविधान निर्माता बनने तक की यात्रा को चित्रित किया गया है। फिल्म यह दिखाती है कि किस तरह समाज ने दलितों के साथ भेदभाव किया और

उन्हें शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा और अन्य मौलिक अधिकारों से वंचित रखा। इस तरह की फिल्में भारतीय समाज में जाति आधारित असमानताओं की जड़ों को उजागर करती हैं और अंबेडकर द्वारा इन असमानताओं को चुनौती देने के प्रयासों पर प्रकाश डालती हैं।इन फिल्मों में डॉ. अंबेडकर के संघर्ष और उनके द्वारा किए गए सामाजिक सुधारों को महत्वपूर्ण तरीके से दर्शाया गया है। "जय भीम" जैसी फिल्मों के जरिए अंबेडकरवादी विचारधारा को नई पीढ़ी तक पहुँचाया गया है। अंबेडकर ने भारतीय समाज में जातिगत उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई और उनके नेतृत्व में दलित समुदाय को उनके अधिकार दिलाने के लिए आंदोलन किए गए। अंबेडकर का मानना था कि जातिगत व्यवस्था केवल समाज के एक हिस्से को नहीं बल्कि पूरी मानवता को प्रभावित करती है। उन्होंने संविधान में दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण का प्रावधान किया ताकि उन्हें समान अधिकार और सामाजिक न्याय मिल सके।उनकी विचारधारा पर आधारित फिल्मों ने यह स्पष्ट किया है कि अंबेडकर ने न केवल दलित समुदाय के लिए बल्कि संपूर्ण भारतीय समाज के लिए सामाजिक न्याय का मार्ग प्रशस्त किया। उदाहरण के लिए, फिल्म "अंबेडकर और संविधान" में यह दिखाया गया है कि कैसे उन्होंने भारतीय संविधान का निर्माण किया, जो समानता और स्वतंत्रता के मूल सिद्धांतों पर आधारित है।डॉ. अंबेडकर के विचारों और उनके सामाजिक सुधारों को दर्शाने वाली फिल्मों ने उनके दर्शन और आंदोलन की गहराई को उभारा है। "अनकही कहानी: बाबासाहेब अंबेडकर" जैसी डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में अंबेडकर के जीवन की अनसुनी और महत्वपूर्ण घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अंबेडकर की विचारधारा में मुख्य रूप से बौद्ध धर्म, सामाजिक समानता, और आर्थिक सुधार जैसे मुद्दे शामिल थे। इन फिल्मों ने यह दिखाया है कि कैसे उन्होंने जातिगत भेदभाव और छुआछूत का अंत करने के लिए संघर्ष किया और दलितों को शिक्षा और राजनैतिक शक्ति के माध्यम से सशक्त बनाया।अंबेडकर पर आधारित फिल्में यह भी दिखाती हैं कि उनकी विचारधारा आज के समय में कितनी प्रासंगिक है। भारतीय समाज में आज भी जातिगत असमानता और उत्पीड़न की समस्याएं विद्यमान हैं। अंबेडकर का संविधान और उनकी आरक्षण नीति आज भी दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए एक जीवनरेखा है। फिल्म "जय भीम" (2021) जैसी समकालीन फिल्में इस बात पर जोर देती हैं कि जाति आधारित उत्पीड़न अभी भी एक वास्तविकता है और अंबेडकर की विचारधारा को आज भी लागू करने की आवश्यकता है।अंबेडकर का मुख्य योगदान यह था कि उन्होंने जाति-आधारित समाज को चुनौती दी और भारतीय समाज में न्याय और समानता की नई अवधारणा प्रस्तुत की। अंबेडकर का मानना था कि एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए शिक्षा और राजनीतिक सशक्तिकरण आवश्यक हैं। फिल्में इस बात को रेखांकित करती हैं कि अंबेडकर का संघर्ष व्यक्तिगत नहीं था, बल्कि यह पूरे समाज के लिए था।फिल्मों के माध्यम से डॉ. अंबेडकर के जीवन और विचारों को लोगों के सामने लाया गया है, जिससे उन्हें सामाजिक परिवर्तन और जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ाई में प्रेरणा मिली है। अंबेडकर ने दलितों को सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए जागरूक किया। उनकी शिक्षाएं आज भी हर वर्ग के लोगों को समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की दिशा में प्रेरित करती हैं। इन फिल्मों के जरिए यह स्पष्ट होता है कि समाज में भेदभाव और असमानता को मिटाने के लिए अंबेडकर के विचार कितने महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ:

- Jain, P.C. (2002). *Ambedkar and the Indian Constitution*. National Film Development Corporation of India.
- Krishnan, S. (2022). *Exploring Caste and Justice in Cinema: The Legacy of Ambedkar in Jai Bhim*. South Asian Studies Journal.
- Patwardhan, A. (1992). *Jai Bhim Comrade: A Study in Caste and Resistance*. DocFilm Society.
- Dev, R. (2004). *The Silent Revolution: Ambedkar's Legacy in Indian Cinema*. Social Change Journal.
- अंबेडकर, बी. आर. (2019). **जाति का उन्मूलन**. नवारुना प्रकाशन.
- नागराज, डी. आर. (2015). **द फ्लेमिंग हार्ट: ए स्टडी ऑफ अंबेडकर**. पेंगुइन इंडिया.
- कुमार, रवींद्र. (2021). **अंबेडकर और उनका संविधान**. आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर (2000)", फिल्म निर्देशन: जब्बार पटेल, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम.
- "जय भीम (2021)", फिल्म निर्देशन: टी.जे. ज्ञानवेल, 2डी एंटरटेनमेंट.